4

मन की भूख

(मत्ती 5:6)

सिग्मंड फ्रूड के अनुसार,[1] मनुष्य की सबसे बड़ी इच्छा आनन्द की इच्छा है, परन्तु फ्रूड गलत था। लोगों की इससे भी मूल और जबर्दस्त आवश्यकताएं हैं। उन में से एक भोजन की आवश्यकता है।

बाइबल में कई उदाहरण हैं कि भूख की प्रेरणा कैसे ज़बर्दस्त हो सकी है। एसाव को इतनी भूख लगी कि उसने ''एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला'' (इब्रानियों 12:16; देखें उत्पत्ति 25:27-34)। इस्राएलियों ने जंगल में ''मछलियां ... खीरे, और खरबूजे और गंदने और प्याज और लहसुन'' के लिए जो वे मिस्र में खाते थे चिल्लाकर यहोवा को क्रोधित किया था (गिनती 11:5; देखें आयत 10)।[2] अगूर ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे निर्धन न बनाए, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह तंगहाली में चोरी करे जिससे परमेश्वर के नाम को बदनामी मिले (नीतिवचन 30:8, 9)। निर्धनता की एक परीक्षा उसके लिए होगी जो भोजन चुराने के लिए भूखा था।[3] यीशु को भूख और प्यास दोनों को समझा। जंगल में जब ''चालीस दिन और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी'' (मत्ती 4:2)। बाद में क्रूस पर उसने कहा, ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28)।

हम मत्ती 5 में धन्य वचनों का अध्ययन कर रहे हैं। हमने पहले तीन धन्य वचनों को देखा है:

> धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
> धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे।
> धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे (आयतें 3-5)।

हम चौथे धन्य वचन पर विचार के लिए तैयार हैं, जो भूख और प्यास की बात करता है: ''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे'' (आयत 6)। यह पाठ ''मन की भूख'' की आवश्यकता पर ज़ोर देगा।

''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूख और प्यासे हैं ...।''

''धर्म'' का अर्थ

''भूख और प्यास'' शब्दों पर चर्चा करने से पहले हमें यह तय कर लेना आवश्यक है कि ''धर्म'' क्या है। क्योंकि हमें उसी की लालसा होनी चाहिए। ''धर्म'' यूनानी शब्द *dikaiosune* शब्द से लिया गया है। यूनानी और अंग्रेज़ी दोनों में इस शब्द का सार ''सही'' है।[4] *Dikaiosune*

के कई अर्थ है। परमेश्वर पर लागू करने पर इस शब्द का अर्थ ''सही व्यक्ति'' होता है। यह बिल्कुल सही होना है। केवल परमेश्वर ही है जो हर पहलू से सही है। लोगों पर लागू करने पर *dikaiosune* के दो अर्थ हो सकते हैं। पहला ''सही जीवन'' है (देखें 1 यूहन्ना 2:29; 3:7, 10)। हम में से कोई भी सिद्ध जीवन नहीं जी सकता। सो यह सापेक्षिक होना है। लोगों पर लागू करने पर *dikaiosune* का दूसरा अर्थ ''सही-खड़े होना'' यानी प्रभु के साथ सही खड़े होना है। यह थोपी गई धार्मिकता है। हम वास्तव में धर्मी नहीं हैं (देखें रोमियों 3:10), परन्तु परमेश्वर हमें धर्मी मान लेता है (देखें रोमियों 4:3, 5; KJV) जब हम यीशु में विश्वास करके उसकी इच्छा को पूरा करते हैं।[5] हम परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत गुण के आधार पर नहीं पर उसके अनुग्रह और करुणा से सही खड़े हो सकते हैं।

लेखक इस पर असहमत हैं कि हमारे वचन पाठ में यीशु के मन में *dikaiosune* की कौन सी परिभाषा है। यदि मुझे तीनों में से चुनना हो तो मैं ''सही खड़े होने'' को चुनूंगा। हमारे मन में अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ-सही खड़े होने की गहरी लालसा होनी चाहिए। परन्तु मुझे नहीं मालूम कि हमें अपनी पसन्द चुननी आवश्यक है।[6] सही व्यक्ति और सही जीवन के लिए कोशिश करने वाला मसीही व्यक्ति परमेश्वर के साथ अच्छी तरह खड़ा होगा।

आपको परमेश्वर के लिए मन की भूख और प्यास होनी यानी उससे जो हम से प्रेम रखता और हमारी परवाह करता है। व्यापक सम्बन्ध की इच्छा करनी आवश्यक है। दाऊद ने लिखा, ''जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हांफता हूं। जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं'' (भजन संहिता 42:1, 2; देखें 63:1; 143:6)। परमेश्वर के लिए हमारे मन की भूख में यीशु के लिए भूख लगना शामिल है जो ''जीवन की रोटी'' है (देखें यूहन्ना 6:48-51)। यदि हम परमेश्वर और यीशु के लिए तड़पते हैं, तो क्या हम उनके साथ सही खड़े होने की लालसा भी नहीं करेंगे? यदि हम में यह भूख है, तो क्या हम सही काम करने, ऐसे रहने की तड़प नहीं करेंगे, जैसे परमेश्वर और यीशु चाहते हैं कि हम हों?

विलियम बार्कले ने चौथे धन्य वचन के यूनानी धर्म शास्त्र पर निम्न अवलोकन दिया है:

> यूनानी व्याकरण का नियम है कि भूख होने और प्यास होने की क्रियाओं के बाद सम्बन्धकारक आता है [जैसे ''रोटी की'' या ''पानी की'' जिसका अर्थ रोटी का भाग या टैंक में से एक लोटा] ...। पर इस धन्य वचन में सबसे असामान्य *धार्मिकता* सीधे तौर पर कर्मकारक, और सामान्य सम्बन्धकारक नहीं। अब यूनानी भाषा में भूख होने और प्यास लगने की क्रियाओं के सम्बन्धकारक के बजाय कर्मकारक होने का, अर्थ यह हो जाता है कि भूख और प्यास *पूरी चीज़* के लिए है ...। इसलिए इसका सही अनुवाद यह है:
>
> > धन्य हैं वे जो पूर्ण धार्मिकता, पूरी धार्मिकता, सम्पूर्ण धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं।[7]

हमारे लिए यूनानी भाषा के बारे में कुछ जानना या उसे समझना जो ''सम्बन्धकारक'' और ''कर्मकारक'' हैं निर्णायक नहीं है। अपने मन में केवल इसी विचार को समझ लें कि यीशु ''पूरी चीज़'' यानी *सम्पूर्ण* धार्मिकता की भूख और प्यास की बात कर रहा है।

धार्मिकता की इच्छा के सम्बन्ध में एक और विचार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चर्चा की गई तीनों परिभाषाएं परमेश्वर के वचन से बड़ी नज़दीकी से जुड़ी हैं। हमारे धर्मी परमेश्वर ने अपने आपको अपने वचन में पूरी तरह प्रगट कर दिया है।[8] हम जान लेते हैं कि उसके वचन का अध्ययन करके हम परमेश्वर के साथ सही खड़े कैसे हो सकते हैं। हमें वचन से जीने का सही ढंग पता चलता है इसलिए हमें हैरान नहीं होना चाहिए कि भजनकार ने परमेश्वर से कहा, ''मैं तेरे *वचन* का गीत गाऊंगा, क्योंकि तेरी सब *आज्ञाएं* धर्ममय हैं'' (भजन संहिता 119:172)। मत्ती 5:6 के अपने अध्ययन में हम जिस भी परिभाषा का इस्तेमाल करें, यदि हम ''धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं'' तो इसमें वचन का गहराई से ज्ञान और समझ होने की भूख और प्यास भी शामिल है।[9]

कई आयतें सिखाती हैं कि परमेश्वर का वचन आत्मा के लिए भोजन देता है। यीशु ने कहा, ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा'' (मत्ती 4:4)। पौलुस ने उसकी बात करते हुए जो उसने कुरिन्थियों को सिखाया, कहा ''मैं ने तुम्हें दूध-पिलाया'' (1 कुरिन्थियों 3:2क)। पतरस ने अपने पाठकों को बताया, ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ'' (1 पतरस 2:2)। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि परमेश्वर के वचन में अपरिपक्व मसीही लोगों के लिए ''दूध'' और परिपक्व मसीही लोगों के लिए ''अन्न'' मिलता है:

> समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे ही हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं (इब्रानियों 5:12-14)।

परन्तु आत्मा के भोजन के लिए केवल वचन को पढ़ना और इसका अध्ययन करना काफ़ी नहीं है। बल्कि हमें वह *करना* भी आवश्यक है जो यह कहता है। यीशु ने कहा, ''मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार *चलूं*'' (यूहन्ना 4:34)।

''भूख'' और ''प्यास'' का महत्व

अब जब कि हमें धार्मिकता के दायरे की बात समझ आ गई है, जिसकी हमें लालसा करनी चाहिए, तो हम अपना अभ्यास ''भूख'' और ''प्यास'' शब्दों पर लगाते हैं। ''धन्य हैं वे जो *भूखे और प्यासे* हैं क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।''

भूख होने और प्यास लगने की बात करने के समय यीशु के शब्दों का अर्थ हम में से कइयों के बजाय पहली सदी के सुनने वालों के लिए अधिक था। हम में से कइयों को यह मानना पड़ेगा कि हम ने इतनी भूख और प्यास अपने जीवन में नहीं देखी है। जब मैं लड़का था और स्कूल से घर आता तो आम तौर पर मेरे पहले शब्द यही होते थे ''भूख से मर रहा हूं!'' पर वास्तव में ऐसा नहीं था। जब कपास के खेतों या गेहूं के खेतों में काम करता था तो भोजन के समय मैं

खूंखार हो जाता था; पर मैं भूख से बेमन नहीं होता था। खेलने के समय मुझे बहुत प्यास लगती थी पर मैं प्यास से मरने से कोसों दूर होता था।

अपने पूरे जीवन में बिना खाने के में कॉलेज में प्रथम वर्ष के दौरान ही रहा हूं। मैं किसी महिला के घर में रहता था, जो कुछ छात्रों के लिए रोज़ दोपहर का खाना बनाती थी। मैं खाना बनाने में सहायता करता, फिर बाद में साफ़ सफ़ाई करता और बर्तन मांजता था। इसके लिए मुझे नाश्ते के लिए खाना, लंच में जो भी मिलता था और रात को सैंडविच मिल जाता था। एक सप्ताहांत पर मेरी मकान माल्किन किसी से मिलने के लिए नगर से बाहर चली गई। मेरे पास कोई पैसा नहीं था सो मैं शुक्रवार से सोमवार तक बिना खाने के रहा।

परन्तु मेरे साथ जो कुछ भी हुआ उसकी तुलना बाइबल के समय में रहने वाले लोगों से किसी प्रकार नहीं होती। मज़दूर मुश्किल से अपने परिवार के खाने के लिए कमा पाते थे। जब उन्हें चोट लग जाती या वे बीमार हो जाते और काम नहीं कर पाते, तो उन्हें कोई वेतन नहीं मिलता था। उन्हें रात को अपने भूख से बिलखते बच्चों की चीखें सुननी पड़ती थी। इसके अलावा कॉलेज के मेरे वर्षों के अनुभव की तुलना आज के समय के बहुत से लोगों से नहीं की जा सकती। मुझे पता है कि जिन लोगों के पास यह पाठ जाएंगे उन में से कई ''भूख'' और ''प्यास'' शब्दों का अर्थ मुझ से बेहतर समझ सकते हैं।

''भूख'' शब्द *peinao* से लिया गया है जिसका अर्थ ''भूख होना, भूखा, ... दुख उठाना, ... ज़रूरतमंद होना।'' प्रतीकात्मक अर्थ में इस्तेमाल करें तो इसका अर्थ ''ज़बर्दस्त लालसा करना, तीव्र इच्छा से तलाश करना'' है।[10] ''प्यास'' *dipsao* से लिया गया है जिसका अर्थ ''प्यास होना; प्यास से दुखी होना।'' प्रतीकात्मक अर्थ में इस्तेमाल करने पर इसका अर्थ उनके लिए है ''जो अपनी आवश्यकता को दर्दनाक ढंग से महसूस करते हैं, और उत्सुकता से उसकी राह देखते, उन चीज़ों जिन से मन को ताज़गी, समर्थन और सामर्थ मिलती है।''[11]

मैंने देखा है कि हम में से कुछ लोगों को समझ नहीं है कि अत्यधिक भूख होने का क्या अर्थ है। हम में से कइयों को यह भी समझ नहीं है कि असल, यानी वास्तविक प्यास क्या होती है। हम टोंटी घुमाते हैं और पानी निकल आता है। बाइबल के देशों में ऐसा नहीं था। उनका पानी कुंओं और चश्मों से आता था और कुएं और चश्मे सूख सकते हैं। इसके अलावा मध्य पूर्व के देशों में झुलसे हुए इलाके के पास जाने वाले लोग (देखें भजन संहिता 63:1) को आम-तौर पर बिना पानी के लम्बा सफ़र करना पड़ता था। उन्हें प्यास की इतनी बेहतर समझ थी कि मुझे कभी नहीं आ सकती।

हमारे वचन पाठ में यूनानी शब्दों से दिखाई गई गम्भीर इच्छा को इतिहास की दो त्रासद घटनों से समझाया जाता है। एक तो 70 ईस्वी में टाइटस द्वारा यरूशलेम की घेराबन्दी की गई थी। जोसेफ़स ने लिखा है कि इस घेराबन्दी से अकाल पड़ गया जो ''अन्य सभी कष्टों से बहुत अधिक था ...। बच्चे उन्हीं निवालों को छीन रहे थे जिन्हें उनके पिताओं ने उनके मुंह से निकाला था, और इससे भी तरस योग्य यह था कि माताएं अपने नवजात शिशुओं के साथ भी ऐसा ही कर रही थीं।''[12]

2 राजाओं 6 में वर्णित एक अकाल पहले पड़ा था। उस भयानक अकाल गदहे का सिर चांदी के अस्सी टुकड़े में बिकता था।[13] अन्य सभी वस्तुएं जो विभिन्न परिस्थितियों में खाना

सोचा भी नहीं जा सकता था, मनुष्य के भोजन के लिए बिकती थीं (आयत 25)। परन्तु अकाल का सबसे भयानक परिणाम आयत 29 में मिलता है, जहां एक मां कहती है, ''तब मेरे बेटे को पकाकर हम ने खा लिया।''[14] मां का प्रेम कितना भी मज़बूत क्यों न हो, पर उस मां में भूख बलवान हो गई थी।

ये उदाहरण कितने भी त्रासद और घिनौने क्यों न हों, शायद वे यीशु की पहली सदी के श्रोताओं के लिए ''भूख'' और ''प्यास'' शब्दों का महत्व बताते हैं। जब यीशु ने भूख और प्यास की बात की तो वह भूख से मर रहे व्यक्ति की जबर्दस्त प्रेरणा की बात कर रहा था जो भोजन के टुकड़े के लिए कुछ भी दे सकता है, या प्यास से मर रहे व्यक्ति की जो पानी की एक बूंद के लिए कुछ भी दे देगा।[15] हम में से हर किसी को जो सवाल उठाना चाहिए वह यह है, ''मुझ में परमेश्वर, उसके मार्ग, और उसकी इच्छा के लिए भूख और प्यास है?'' नीचे कुछ टेस्ट दिए गए हैं जो यह तय करने में आपकी सहायता कर सकते हैं कि आप सचमुच में धार्मिकता के भूख और प्यासे हैं या नहीं।[16]

आपको शारीरिक बातों की अधिक चिन्ता है या आत्मिक बातों की। क्या आपके लिए सम्पत्ति इकट्ठा करने से बढ़कर परमेश्वर के निकट होना अधिक महत्वपूर्ण है? क्या लोगों के साथ प्रसिद्ध होने से बढ़कर आपकी नज़र में परमेश्वर के साथ सही होना महत्वपूर्ण है? क्या आप सफ़ल होने से बढ़कर भक्तिपूर्ण जीवन जीने की इच्छा कर रहे हैं? आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं। कइयों के लिए सरमन सुनने के लिए आराम से बैठना कठिन है, जबकि उन्हें मनोरंजन के लिए कई कई घण्टे बैठने में कोई दिक्कत नहीं होती।

आप आत्मिक रूप में ''खिलाए जाने'' यानी परमेश्वर और उसके मार्ग के बारे में सीखने के हर अवसर का लाभ उठाते हैं? एक बूढ़े किसान ने एक प्रचारक को बताया, ''लगता है कि आप लोगों को बाइबल क्लास और आराधना में आने के लिए कहने में काफ़ी समय बिताते हैं। मुझे चारा खिलाने के लिए अपनी गायों से कभी विनती करनी नहीं पड़ती।'' भूख से मर रहे आदमी को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि उसे खाना कहां मिलेगा।

क्या आप आत्मिक ''भोजन'' के लिए समय पर हैं या आप देरी से आते हैं? सचमुच में भूखा व्यक्ति खाना खाने का समय आने पर मेज पर प्रतीक्षा कर रहा होगा।

क्या आपकी आत्मिक भूख बढ़ रही है और परिपक्व हो रही है? क्या आप ''अन्न'' का आनन्द लेने लगे हैं या अभी भी ''दूध'' पर ही निर्भर हैं (देखें इब्रानियों 5:12-14; 1 कुरिन्थियों 3:2)?

सच्चाई से अपनी जांच से हमें अगर यकीन हो जाए कि हमें धार्मिकता की उतनी भूख और प्यास नहीं है जितनी होनी चाहिए। तो क्या? हमें भूखे मन रखने में कौन सहायक हो सकता है? एक उपयोगी योजना पहले तीन धन्य वचनों में से काम करना है। यदि हम अपनी गम्भीर आत्मिक आवश्यकता को समझ लें (पहला धन्य वचन), तो हम गहरे शोक से भर जाएंगे (दूसरा धन्य वचन), और परमेश्वर और उसकी इच्छा के सामने झुकने को तैयार और उत्सुक हो जाएंगे (तीसरा धन्य वचन)। निश्चय ही यह हमें पुकारने के लिए मजबूर कर देगा, ''हे परमेश्वर, मैं चाहता हूं कि तू मेरे जीवन में हो। मेरे जीवन को आशीषित कर दे। मुझे बता कि मैं क्या करूं और मैं वही करूंगा!'' यह धर्म की भूख और प्यास होना है (चौथा धन्य वचन)।

परन्तु इस पाठ को हर सम्भव व्यावहारिक बनाने के लिए मैं आत्मिक भूख, विशेषकर परमेश्वर के वचन को सीखने की भूख को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले उपायों के कुछ सुझाव देना चाहता हूं। पहले तो मैं उन से जो परमेश्वर के वचन को सिखाते और सुनाते हैं कुछ कहना चाहता हूं। हमें जहां तक हो सके अपने ''भोजन'' को भूख बढ़ाने वाला बनाना चाहिए। मेरी पत्नी ने मुझे एक विज़ुअल एड के बारे में बताया जिसका इस्तेमाल बाइबल क्लास की महिमा शिक्षिकाओं से बात करने पर मेरी ओलर किया करती थीं। बहन ओलर प्लेट में ब्रेड का एक टुकड़ा रख लेती और ब्रेड की पौष्टिकता पर बातें करती। वह पूछती, ''कितने लोग इस ब्रेड को खाना चाहेंगे?'' अधिकतर स्त्रियां हाथ खड़ा कर देतीं। फिर वह ब्रेड को हाथों में भरतीं, इसे फर्श पर रखतीं और उस पर पैर रख देतीं। वह पीछे हटती हुई कहतीं, ''उस ब्रेड में अभी भी पूरी पौष्टिकता है। आप में से इसे कितने लोग खाना चाहेंगे?'' किसी का हाथ खड़ा न होता। उसकी बात का अर्थ सीधा था कि केवल परमेश्वर के वचन को सिखाना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि हमें अपने पाठ को आकर्षक ढंग से बताना भी आवश्यक है जिससे हमारे छात्रों का ध्यान खिंचे और उनकी दिलचस्पी बढ़े। धार्मिक हो या सांसारिक हम में से कइयों को वे टीचर याद आ सकते हैं जिनके सबक रूखे और ''स्वाद-रहित'' होते थे, जबकि और लोग सीखने को रोचक बना देते थे। हम में से जो सिखाते और प्रचार करते हैं आवश्यक नहीं कि वह इस लक्ष्य को पा ही लें पर हमें चाहिए कि जहां तक हो सके अपने ''भोजन'' को भूख बढ़ाने वाला बनाएं।[17]

यह कहने के बाद मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि जहां परमेश्वर के वचन की भूख की कमी है वहां मुख्य दोष वक्ता का नहीं बल्कि सुनने वाले का है। वर्षों से मैंने प्रवचनों और पाठों की कई बार आलोचना सुनी है, ऐसे प्रवचनों और पाठों की जिनमें प्रवेश के वचन की स्पष्ट शिक्षा होती है। आलोचना से मैं चकित हो गया कि सुनने वालों को आत्मिक भूख है भी की नहीं। मैंने कई सिखाने वालों और प्रचारकों को सुना है, जिनमें कुछ बड़े, कई अच्छे, कुछ इतने अच्छे नहीं, और थोड़े से सचमुच में बुरे थे।[18] पर मुझे कोई ऐसा सबक या प्रवचन याद नहीं है जिससे मुझे कुछ न कुछ मिला न हो।

यदि हमारा आत्मिक पेट ठीक नहीं है तो हम क्या कर सकते हैं? फिर से मसीही लोगों के लिए महत्वपूर्ण लक्ष्य, परमेश्वर की सहायता से पहले तीन धन्य वचनों में दी गई खूबियों को बढ़ाना है। इसे करने के लिए हम शारीरिक भूख बढ़ाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली तकनीकों का ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

(1) *आत्मिक पौष्टिकता की आवश्यकता को समझें।* मैदानी उपदेश में यीशु ने कहा, ''धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो; क्योंकि तृप्त किए जाओगे'' (लूका 6:21क)। फिर उसने आगे कहा, ''हाय, तुम पर; जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होंगे'' (आयत 25क)। अन्य शब्दों में, ''हाय तुम पर जिन्हें आत्मिक भूख नहीं है, क्योंकि तुम परमेश्वर के सामने आत्मिक रूप में भूखे खड़े होगे!'' सावधान रहें कि आप लौदीकिया के लोगों की तरह न बन जाएं, जिन्होंने कहा कि उन्हें ''किसी वस्तु की घटी नहीं'' (प्रकाशितवाक्य 3:17)।

(2) *आत्मिक पौष्टिकता के धन्यवाद को बढ़ाएं।* कोई ऐसा शारीरिक भोजन है जो आपको अब अच्छा लगता है पर पहली बार उसे खाने को अच्छा नहीं लगा था? शायद आपके माता-पिता ने ज़बर्दस्ती आपको खिलाया था, और धीरे धीरे आप इसे पसन्द करना सीख गए। एक

व्यस्क के रूप में शायद आपने पता लगाया कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको कुछ भोजनों की आवश्यकता है और अब जब आपको अच्छे लगने लगे हैं पहले आप इसे खाते नहीं थे। शारीरिक भोजन के लिए भूख बढ़ाने की तरह हम आत्मिक भोजन के लिए भी भूख बढ़ा सकते हैं।

(3) *आत्मिक व्यायाम से अपनी आत्मिक भूख बढ़ाएं।* दिन भर के कठिन शारीरिक परिश्रम से बढ़कर भोजन का सवाद और कोई चीज़ नहीं बढ़ाती। इसी प्रकार आत्मिक व्यायाम हम में आत्मिक भोजन की भूख बढ़ाएगा। KJV के अनुसार, पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, ''भक्ति के नीमित ... व्यायाम कर'' (1 तीमुथियुस 4:7ख; देखें आयत 8)। NASB में हम पढ़ते हैं, ''हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार हमारे दान अलग-अलग हैं, इस कारण हम में से हर एक को उसी के अनुसार व्यायाम करना चाहिए'' (रोमियों 12:6क)। एक उदाहरण के रूप में कि आत्मिक व्यायाम आत्मिक भूख को बढ़ाने में कैसे सहायक हो सकता है, क्लास में हो या किसी मित्र से, बाइबल को सिखाने पर विचार करें। यदि आप सिखाने के प्रति सचेत नहीं हैं तो आपको परमेश्वर को भाने वाला और परमेश्वर की महिमा करने वाला काम करना चाहिए। इसलिए आप प्रत्येक पाठ को ध्यान से अध्ययन करके और पूछे जा सकने वाले प्रश्नों का उत्तर देने के योग्य होने के लिए कुछ और अध्ययनों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित होंगे।

(4) *''खाते रहने'' के द्वारा अपनी आत्मिक भूख को बढ़ाएं।* जो व्यक्ति लगातार खाता नहीं है उसकी भूख मर सकती है या वह ''जंक फूड'' से पेट भर सकता है[19] जो स्वस्थ खाना खाने की उसकी भूख खत्म करता है। आत्मिक रूप में हमें लगातार ''खाने का समय'' रखना आवश्यक है। लूका द्वारा बिरिया के लोगों की सराहना की गई थी क्योंकि ''उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया'' ''प्रतिदिन पवित्र शास्त्र में ढूंढते थे'' (प्रेरितों 17:11)। हमें मण्डली के ''भोजन के समय''[20] उपस्थित होना आवश्यक है और व्यक्तिगत अध्ययन और प्रार्थना के लिए भी प्रतिदिन समय देना आवश्यक है। निरन्तर अध्ययन करना हमें वचन को सही ढंग से इस्तेमाल में लाने के योग्य बना देगा (2 तीमुथियुस 2:15)।

(5) *भूख मारने वालों से सावधान।* जैसे शारीरिक जंक फूड हमारे स्वस्थ खाने की भूख खत्म कर सकता है वैसे ही मानसिक जंक फूड परमेश्वर की भूख कम कर सकता है। हमारे सांसारिक मामलों और सांसारिक मनोरंजन[21] से इतने भरे हो सकते हैं कि आत्मिक भोजन हमें आकर्षित ही नहीं कर पाता। कई लोग संसार की बातों की लालसा रखते हैं जो उनके मन को संतुष्ट नहीं कर सकती (देखें यशायाह 55:2)।

(6) एक और सुझाव है कि *अपने ''भोजन'' को दूसरों के साथ बांटने से सहायता मिल सकती है।* विधवाएं और विधुर मुझे बताते हैं कि उनके जीवन साथी की मृत्यु के बाद सही ढंग से खाना खाने की उनकी इच्छा मर गई है। अकेले खाने पर उनकी भूख मिट जाती है। यदि आपको अपनी आत्मिक भूख बढ़ाने में दिक्कत आती है तो अपने आत्मिक भोजन को दूसरों के साथ बांटने से सहायता मिल सकती है। पति और पत्नियां मिलकर इकट्ठे अध्ययन कर सकते हैं। परिवार इकट्ठे प्रार्थना कर सकते हैं। किसी मित्र के साथ बैठकर उसके साथ बाइबल की बात करें। अध्ययन और प्रार्थना के लिए मित्रों का समूह भी इकट्ठा हो सकता है।

''... क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।''

''धन्य [प्रसन्न] हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं ...।'' धर्म की भूख और प्यास का प्रसन्नता से क्या सम्बन्ध है? जैसे कि अन्य धन्य वचनों के अपने अध्ययनों में हमने देखा है, व्यवहार प्रसन्नता में अपने आप में बड़ा योगदान दे सकता है। जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं उन्होंने अपनी सही प्राथमिकताएं बना ली हैं। जिस कारण उनके संसार को नाखुश करने वाली परेशानियों से परेशान होने की सम्भावना कम है। परन्तु फिर, ज़ोर तो धन्यवाद के अन्त में परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा पर है, जो लोग धर्म के भूखे और प्यासे हैं उन्हें अतिरिक्त-प्रसन्नता मिलेगी, ''क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।''

''तृप्त किए जाएंगे'' *chortazo* लिया गया शब्द है। KJV में ''भरे जाएंगे'' है। जानवरों के सम्बन्ध में इस्तेमाल करने पर *chortazo* का अर्थ ''शाक, घास, चारा खिलाना, भोजन से भरना या तृप्त करना, मोटा करना।''[22] ''मनुष्यों के सम्बन्ध में, यह पूरी तरह से और पूरी सन्तुष्टि तक भरने का वर्णन करता है।''[23] यीशु द्वारा पांच हज़ार लोगों को खिलाने के वर्णन के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है: ''और सब खाकर तृप्त हो गए'' (मत्ती 14:20)। मैं पेट भर खाना हो जाने के बाद एक आदमी को कुर्सी पर पसर कर बैठा देखने की कल्पना करता हूं। उसके मुंह से सन्तुष्टि भरी आह निकलती है। फिर वह अपनी पत्नी से कहता है, ''बढ़िया, प्रिय, बहुत बढ़िया।'' यह आदमी ''भरा हुआ'' और ''तृप्त'' है।

किसान अपने जानवरों का पेट भरेंगे, पत्नियां अपने पति की भूख मिटाएंगी और प्रभु अपने बच्चों का पेट भरेगा, उन्हें तृप्त करेगा। भजन संहिता 107 में लेखक ने जंगल में परमेश्वर के इस्राएल को तृप्त करने की बात लिखी। उसने लिखा:

> लोग यहोवा की करुणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है (आयतें 8, 9)।

परमेश्वर ने जिस प्रकार जंगल में शारीरिक भूख और प्यास मिटाई, वैसे ही आज वह आत्मिक प्यास और भूख को मिटाता है।

कई लोग यह जोर देते हैं कि मत्ती 5:6 वाली प्रतिज्ञा केवल इसी जीवन के लिए हो सकती है क्योंकि इसी जीवन में असंतुष्टि और अतृप्ति भरी है। एक बार फिर मेरा मानना है कि मत्ती 5:6 वाली प्रतिज्ञा अब और अनन्त काल दोनों के लिए है। यीशु ने कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा'' (यूहन्ना 6:35)। यीशु द्वारा दिए गए आश्वासन में ''अन्तिम दिन'' (आयतें 39, 40, 54) की आशिषें भी हैं, पर आज भी आशिषें बाहर नहीं है (देखें आयतें 56, 57)।

इस जीवन में

क्या आप को परमेश्वर को जानने की भूख है? यिर्मयाह 31:34 में नई वाचा (नियम) के सम्बन्ध में यही प्रतिज्ञा की गई थी: ''... यहोवा की यह वाणी है छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे'' (देखें इब्रानियों 8:11)। आप ''परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण''

हो सकते हैं (इफिसियों 3:19)। क्या आप परमेश्वर के साथ सही खड़े होने की इच्छा रखते हैं? प्रभु पर विश्वास करने (देखें रोमियों 4) और प्रभु की इच्छा को पूरा करने (रोमियों 1:5; 16:26) पर आपको यह मिल सकता है। क्या आपको भक्तिपूर्ण जीवन जीने की ललक है? तो आप ''आत्मा के चलाए चलकर'' और ऐसा कर सकते हैं और परमेश्वर का आत्मा आपको ''देह की क्रियाओं को मारने'' में सहायता करता है (रोमियों 8:4, 13)।

आप को परमेश्वर, उसके मार्ग और उसकी इच्छा को स्पष्ट समझने की ललक है? यीशु ने प्रतिज्ञा की, ''और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा'' (यूहन्ना 8:32)। यदि आपका ''भले और उत्तम मन'' है (लूका 8:15) तो आप ''सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण'' हो सकते हैं (कुलुस्सियों 1:9)। बाइबल में भले मन वाले लोगों के कई उदाहरण हैं जो परमेश्वर की इच्छा को जानने के इच्छुक थे और जिन्हें परमेश्वर ने उसे ढूंढ़ने में सहायता की। मैं ऐसे लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं जिन्हें सच्चाई को जानने की तड़प थी और जिन्हें, मेरा मानना है कि परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए परमेश्वर के उपाय से सहायता दी गई।[24] मैं व्यक्तिगत रूप से लोगों को जानता हूं जो सच्चाई को जानने को तरसते हैं और जिन्हें मेरा मानना है कि परमेश्वर की इच्छा को समझने में सहायता के लिए परमेश्वर की ओर से किसी न किसी प्रकार उपाय किया।[25]

संसार निराश लोगों से भरा पड़ा है जो सांसारिक भूसी से अपने अन्दर की भूख को मिटाने की कोशिश में लगे हैं।[26] हमारे मन केवल परमेश्वर की उपस्थिति में भी सन्तुष्ट और तृप्त हो सकते हैं।

आने वाले जीवन में

धार्मिकता की हमारी भूख और प्यास इस जीवन में केवल आंशिक रूप में तृप्त की जाएगी। यीशु ने हमारे पाठ में वर्तमान काल का इस्तेमाल किया, जिसका अनुवाद ''धन्य हैं वे जो भूखे और प्यासे रहते हैं'' हो सकता है। जेम्स टोले ने लिखा है, ''विरोधाभास के रूप में कहें तो, मसीही व्यक्ति को अपनी आत्मिक भूख और प्यास के कारण मसीह में मिलने वाली धार्मिकता अपने आप में और भूख और प्यास को जन्म देने वाली है।''[27] परमेश्वर इस जीवन में आत्मिक रूप में हमें भरेगा और तृप्त करेगा, पर इसके बावजूद भूख और प्यास बढ़ती रहेगी जो पूरी तरह से तभी मिट सकती है जब हम स्वर्ग में प्रभु के साथ होंगे।

प्रभु के लिए हमारे मन की भूख तभी मिटेगी, जब अन्त में हम उसकी चमकदार उपस्थिति में होंगे (प्रकाशितवाक्य 22:1-5)। सही जीवन जीने की हमारे मन की भूख स्वर्ग में उसकी सेवा करने के समय मिट जाएगी (आयत 3)। सही खड़े होने की हमारे मन की भूख हमारे ''उसके जैसे'' होने पर मिट जाएगी ''क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। यूहन्ना ने लिखा है कि स्वर्गीय निवास में परमेश्वर के लोगों ''भूखे और प्यासे न होंगे: ... क्योंकि मेम्ना ... उनकी रखवाली करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा'' (प्रकाशितवाक्य 7:16, 17)।

सारांश

''धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।'' क्या *आप* ''धर्म के भूखे और प्यासे'' हैं ? किसी ने कहा है, ''यदि आप भूखे नहीं हैं तो या तो आप सोए हुए हैं, या पेट भरा हुआ है या मुर्दा है।''[28] अधिकतर माताएं अपने बच्चों को भूख न लगने पर परेशान हो जाती हैं; भूख न लगना खराब सेहत की निशानी हो सकता है; शारीरिक स्वाथ्य लिए यह चिन्ता सही है पर आत्मिक स्वास्थ्य के लिए यह उससे भी आवश्यक है। धार्मिकता की भूख न लगना स्पष्ट रूप से आत्मिक मृत्यु का कारण बनता है।[29]

यदि आपको धर्म और भूख की प्यास है, तो आपके पास यह दिखाने का अवसर है कि आपको कितनी इच्छा है। आप यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करके (रोमियों 10:9, 10) उसमें बपतिस्मा ले सकते हैं (गलातियों 3:26, 27)। बपतिस्मा लेने का धर्म की इच्छा करने से क्या सम्बन्ध जब यीशु ने यूहन्ना ने उसे बपतिस्मा देने को कहा, तो उसका उत्तर था, ''... हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'' (मत्ती 3:15)।

डेल हार्टमैन ने एक जवान की कहानी बताई है जिसके पास अच्छी नौकरी, प्रेम करने वाली पत्नी और सुन्दर बच्चे थे। तौभी दिन के अन्त में जब वह काम से घर आता, तो आम तौर पर उसके मन में विचार आता: ''जीवन में इससे बढ़कर होना चाहिए।'' उसे वह ''बढ़कर'' मिल गया जब उसे यीशु और उसके मार्ग का पता चला।[30] प्रभु से दूर रहकर वास्तविक तृप्ति नहीं हो सकती। मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही उसके पास आ जाएं। ''आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले'' (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

टिप्पणियां

[1]सिग्मंड फ्रूड (1856-1939) को ''मनोविश्लेषण का पितामाह'' कहा जाता है। वह बीसवीं शताब्दी में अधिक प्रभावशाली विचारकों/लेखकों में से एक था, परन्तु उसमें मसीही मूल्यों की कमी थी। [2]मिस्र की दास्ता में रहते हुए इस्राएलियों को सम्भवतया उन भोजनों में से अधिक नहीं मिलते होंगे जो उन्होंने याद किए। जब हम ''अच्छे पुराने दिनों'' को याद करते हैं तो अक्सर हम उन दिनों की बुरी बातों को भूल जाते हैं। [3]देखें नीतिवचन 6:30, 31. [4]यूनानी में, ''सही'' की अवधारणा *dikaios* से ली गई है। [5]अध्याय 4 में चाहे केवल विश्वास का उल्लेख है पर रोमियों की पुस्तक यह ज़ोर देती है कि यह विश्वास यीशु में है (देखें 3:22) और यह आज्ञाकारी विश्वास है (देखें 1:5; 16:26)। [6]एक शब्द के कई सम्भावित अर्थ होने पर संदर्भ से हमें आम तौर पर पता चलता है कि कौन से अर्थ को प्राथमिकता दी गई है। इस मामले में संदर्भ एक अर्थ के ऊपर एक निश्चित अर्थ का पक्ष लेता प्रतीत नहीं होता। [7]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल आफ़ मैथ्यू,* अंक 1, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 96. [8]प्रकृति से हम परमेश्वर के कुछ बातों को जान सकते हैं (देखें रोमियों 1:20), पर परमेश्वर का सम्पूर्ण प्रकाशन उसके वचन में ही है। [9]इस पाठ में वचन में मिलने वाली आत्मिक खुराक पर ज़ोर दिया जाएगा। हमारे मनों को प्रार्थना में और यीशु के निकट आने के द्वारा परमेश्वर के साथ समय बिताने से भी खुराक मिलती है (देखे यूहन्ना 6:35) और मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ आराधना करने और संगति रखने से भी खुराक मिलती है। इस पाठ को प्रस्तुत करने पर जहां आपके सुनने वालों के किए बहुत आवश्यक हो वहां ज़ोर दें। [10]सी. जी. विल्के एंड विल्बिल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 498.

[11]वही, 153. [12]ह्यूगो मेकोर्ड, *हैप्पीनेस गारंटीड* (मरफ्रीस्बोरो, टेनिसी: डिहॉफ़ पब्लिकेशंस, 1956), 30-31 से लिए गए हैं; जोसेफस *वार्स ऑफ़ द ज्यूस* 5.10. [13]यह लगभग 200 पौंड चांदी का था। यदि आपको चांदी की वर्तमान कीमत का पता हो तो आप ''चांदी के अस्सी टुकड़े'' वाक्यांश को इसकी वर्तमान राशि में बदल सकते हैं। [14]इस आयत का हवाला देते हुए मैंने कहा, ''मैं शायद उसके शब्दों को दोहरा नहीं सकता।'' सम्भवतया बच्चा कुपोषण से पहले ही मर चुका था; यदि ऐसा हुआ तो यह भी एक दुख घटना है। [15]प्यास के बारे में आप अधोलोक वाले उस धनवान के उदाहरण का इस्तेमाल कर सकते हैं जिसने अपनी जीभ को ठण्डा करने के लिए पानी की कुछ बूंदे मांगी थीं (लूका 16:24)। [16]जहां आप प्रभु के लिए काम करते हैं वहां की स्थिति की आवश्यकता के अनुसार बदल लें। [17] *कैसे* करें यह एक और विषय है उनके और उसके जीवनों के लिए कैसे प्रासंगिक है। क्लास में होने पर प्रश्न करने से विचार उत्पन्न हो सकते हैं। [18]''बुरा'' का इस्तेमाल प्रस्तुति के अर्थ में किया गया है न कि सन्तुष्टि के अर्थ में। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि यह झूठे शिक्षक थे। [19]''जंक फूड'' वह भोजन है जिसमें कैलरी तो बहुत पर पोषक तत्व कम से कम पाए जाते हैं। डोनट्स अच्छा उदाहरण हैं। कम मात्रा में लेने से जंक फूड हानिकारक नहीं होता; पर इसे मुख्य भोजन बना लेने पर, शरीर में आवश्यक पोषण की कमी हो जाती है। [20]मसीही लोगों के लिए आत्मिक ''भोजन का समय'' में बाइबल अध्ययन, आराधना सेवा और सुसमाचारीय सभाएं हो सकते हैं।

[21]जहां आप रहते हैं उसे उस समाज की आवश्यकता के अनुसार विस्तार दें। अमेरिका में मैं सम्भवतया फिल्मों, टैलिविज़न और बहुत सारे प्रकाशन की बात करता हूं। सभी फिल्मे, टैलिविज़न कार्यक्रम बुरे नहीं होते; जब वे मुख्य मानसिक भोजन बन जाते हैं तो मन को आवश्यक खुराक नहीं मिल पाती। [22]थेयर, 670. [23]जेम्स एम. टोले, *दि बीटीच्यूडस* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: टोले पब्लिकेशंस, 1966), 48. [24]इसके उदाहरणों में इथियोपिया की कलीसिया (प्रेरितों 8) और कुरनेलियुस (प्रेरितों 10; 11) शामिल होंगे। [25]आप अपने अनुभव से एक या दो उदाहरण डाल सकते हैं। [26]यह शब्दावली लूका 15:16 से ली गई है; KJV. [27]टोले, 48. [28]अज्ञात रेडियो प्रचारक रिक्की बुहर, ऑडिटोरियम अडल्ट क्लास, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, मार्च 26, 2006 द्वारा उद्धृत। [29]1 तीमुथियुस 5:6 आत्मिक मृत्यु की बात करता है। [30]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, अगस्त 20, 2006 को दिया गया प्रवचन।